Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

दलितों की कुंठा

डॉ. मनीषा सिंह मरकाम* पूजा वर्मा **

*** सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेस, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत**

**** शोधार्थी, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेस, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत**

शोध सारांश – स्वतंत्रता के बाद के वर्षों में हिंदी साहित्य में दलित जीवन को लेकर संवेदना बढ़ी लेकिन यह मुख्य रूप से ऊंची जाति के लेखकों द्वारा व्यक्त की जाती रही। प्रेमचंद जैसे लेखक अपने उपन्यासों में दलित पत्रों को शामिल करते थे लेकिन यह सहानुभूति प्रधान चित्रण था जिसमें दलितों की वास्तविक आवाज गायब थी।

मोहनदास नैमिशराय हिंदी दलित साहित्य में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुए हैं। उन्होंने दलित समाज के वास्तविकता को बिना किसी लाग–लपेट के प्रस्तुत किया और उनके संघर्षों को साहित्य में एक नए दृष्टिकोण के साथ रखा। उनका साहित्य केवल शोषण की बात नहीं करता बल्कि सामाजिक बदलाव, आत्म सम्मान और राजनीतिक चेतना की ओर भी संकेत करता है। उन्होंने अपने साहित्य में हिंदी दलित उपन्यासों को आत्मकथात्मक शैली से बढ़ाकर सामाजिक, राजनीतिक और बौद्धिक विमर्श से जोड़ा। इस प्रकार उन्होंने दलित समाज की आवाज को बुलंद किया। मोहनदास जी के उपन्यासों में दलितों की कई प्रकार की कुंठाएं हमें देखने को मिलती है। नब्बे के दशक में दलित आत्मकथाओं का दौर प्रारंभ हुआ। मोहनदास जी ने अपनी पहली दलित आत्मकथा लिखी, जिसने हिंदी साहित्य में दलित जीवन का आईना सबके सामने रख दिया है।

शब्द कुंजी – संजोया– एकत्रित करना, गुलामी –दासता, समृद्ध –विशाल, परिपाटी – प्राचीन समय की परंपरा।

प्रस्तावना – नब्बे के दशक में मराठी साहित्य अनूवादित होकर हिंदी में आया और हिंदी साहित्य समृद्ध होने लगा। हिंदी 'साहित्यकारों ने दलित समाज को अपने साहित्य में स्थान दिया। दलित साहित्यकार विशेष रूप से दलितों की यथार्थ स्थिति को शब्द चित्र रूप में प्रस्तुत कर रहे थे। इसका प्रारंभ मोहनदास नैमिशराय की पहली दलित आत्मकथा से होता है, जिन्होंने दो भागों में 'अपने–अपने पिंजरे' नमक आत्मकथा लिखी जो दलित जीवन को यथार्थ दृष्टि से बयां करती है। जिसने हिंदी साहित्य में दलित जीवन का आईना सबके सामने रख दिया है। इसी श्रेणी में ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'जूठन', कौशल्या जी की 'दोहरा अभिशाप', सूरजपाल चौहान की 'तिरस्कृत,' माता प्रसाद गुप्त की 'झोपड़ी से राजभवन', डी आर जाटव की 'मेरा सफर मेरी मंजिल', श्योराजसिंह बेचैन की 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर', सुशीला टाक भोर का 'शिकंजे का दर्द', आदि दर्जनों आत्मकथाएं लिखी गई है। सभी आत्मकथाओं में दलितों की कुंठाओं को चरितार्थ किया गया है।

मोहनदास नैमिशराय हिंदी दलित साहित्य के आधार स्तंभ कहे जाते हैं, जिन्होंने दलितों की यथार्थ स्थिति को अपनी विधाओं में स्थान दिया है। अपने उपन्यासों, कहानी, आत्मकथा, में दलित जीवन की असहनीय दर्द को संजोया है। 'मुक्तिपर्व' उपन्यास में नैमिशराय ने दलितों की सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है चाहे वह आजादी के पहले की हो या बाद की। नैमिशरायजी दलितों के प्रति लिखते हैं 'उन्हें विरासत में दोहरी गुलामी मिली थी वह किं कर्तव्य विमुढ थे।'[1] मुक्तिपर्व उपन्यास में लेखक ने भारतीय समाज की विषमतावादी सामाजिक स्थिति का यथार्थ वर्णन किया है। दलितों की वह आत्मीय पीड़ा जो कभी बाहर नहीं आ सकी। लेखक ने अपने उपन्यासों में पात्रों की उस छवि को दिखाया है, जहां वे अपने लिए खड़े होने का साहस कर सके हैं।

'वीरांगना झलकारी बाई' उपन्यास एक गौरवशाली इतिहास है। झलकारी रानी लक्ष्मीबाई की सहेलियों में प्रिय थी, किंतु लक्ष्मी बाई के राज्य में भी दलितों की स्थिति सोचनीय थी। झलकारी कोरी समाज की लड़की थी बचपन में वह अपनी बहादुरी से बाघ को मार डालती है लेकिन यहां भी सवर्ण समाज उसकी बहादुरी की उपेक्षा करता है। लेखक लिखते हैं–

'छोटी जात की लड़की किसी बाघ को मार दे तत्कालीन समाज की परिपाटी के अनुसार इसमें विरोधाभास था, वीरता और बहादुरी के सारे गुण तो स्वर्ण समाज के लिए सुरक्षित कर रखें थे।'[2] आजादी की लड़ाई में दलितों के योगदान को भी सवर्ण समाज ने शून्य ही समझा। दलितों के प्राणों का मूल्य तो तब समझा जाता, जब उनके जीवन का मूल्य आंका जाता। दलितों का जन्म तो बस गुलामी के लिए हुआ था।

'क्या मुझे खरीदोगे' उपन्यास लेखक द्वारा दलित नारी को केंद्र में रखकर लिखा गया है। यहां भी दलितों की कुंठाओं को साकार किया गया है। सरिता अपनी मां के साथ दलित बस्ती में रहती थी। इस उपन्यास में भी हम देखते हैं कि दलित लड़की उच्च समाज के लिए सिर्फ वासना का साधन थी, घर की लक्ष्मी के रूप में स्वीकार नहीं थी। यहां भी सागर सरिता को प्रेम जाल में फंसा लेता है, वह यहां भी नहीं रुकता, सरिता के साथ जिस्मानी संबंध बनाता है जब सरिता पेट से होती है तब अपनी उच्च जाति के सामाजिक

बंधनों का वास्ता देखकर शादी करने से इनकार कर देता है। यहां भी सरिता दलित स्त्री खुद को ठगा सा महसूस करती है सागर सरिता से कहता है– 'माना कि तुम्हारे घर वाले तैयार हो जाएंगे पर मेरा परिवार तुम्हें कभी अपने घर की बहू स्वीकार न कर सकेगा। इसलिए कि जिस जाति से तुम हो उसे जाति की बहू को वह अपने घर में सहन नहीं कर पाएंगे।'[3] इस उपन्यास में भी हमें यही महसूस होता है, कि जिस्मानी संबंध बनाने में समाज नहीं देखी जाती। हम कितने भी विकसित भारत नया भारत शिक्षित भारत उज्जवल भारत का नारा लगा ले, जब तक जात–पात की मानसिकता से ऊपर नहीं उठ सकेंगे विकसित नहीं हो सकेंगे।

वर्तमान में भी सरिता की कुंठा कई स्त्रियों में दर्द के रूप में सांस ले रही है। दलित जाति का होना सवर्ण समाज के लिए मृत के समान है, जिनकी ना भावनाएं होती है ना सपने, ना दर्द उन्हें बस पशु तुल्य उपाधि दे दी गई है। लेखक ने अपने एक और उपन्यास 'आज बाजार बंद है' में वेश्याओं का उपयोग राजनेता किस प्रकार से करते हैं को पाठकों के सामने चरितार्थ किया है। एक तरफ तो वह विभिन्न सामाजिक संस्थाओं, धार्मिक संगठनों, द्वारा वेश्याओं की वास्तविक स्थिति में बदलाव का नारा देते हैं। संसद में वेश्या उन्मूलन पर चर्चा होती है, लेकिन दूसरी ओर राज्य व्यवस्था इसकी राजनीति करने में ही धन्यता मानता है। उपन्यास में एक महिला सांसद कहती है –सरकार क्या कर रही है? यह सभी को मालूम है, आप ही मंत्रालय से दलितों, विकलांगों, महिलाओं के नाम पर करोड़ों रुपया को रेवड़ी की तरह बांटा जा रहा है सुधार किसका हो रहा है? चंद भड़वे और दलालों का।'[4] उपर्युक्त उपन्यास में नैमिशराय जी ने दलितों के राजनीतिक जीवन को चरितार्थ किया है। राजनीतिक जीवन में दलितों के शोषण का वास्तविक क्षेत्र पाठकों के सामने रेखांकित किया है। लेखक ने दलितों की उस कुंठा को उपन्यास में स्थान दिया है जो दलितों की आत्मा में समाहित थी।

मोहनदास नैमिशराय जी ने अपने उपन्यासों में आत्महीनता से बाहर निकल कर पात्रों के संघर्ष को दिखाया जो अपने आत्मसम्मान और हक की लड़ाई स्वयं लड़ते हैं। लेखक अपने उपन्यास के पात्रों को पीड़ित दिखाकर सहानुभूति नहीं चाहते हैं उन्हें जागरूक, संगठित और संघर्षशील बनाना चाहते हैं। लेखक के उपन्यास, कहानी, नाटक या आत्मकथा किसी भी विधा में दलितों की कुंठाओं को यथार्थ स्थिति में चित्रित किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. मुक्ति पर्व, मोहनदास नैमिशराय पृष्ठ संख्या 77
2. वीरांगना झलकारी बाई, मोहनदास नैमिशराय पृष्ठ संख्या 23
3. क्या मुझे खरीदोगे, मोहनदास नैमिशराय पृष्ठ संख्या 45
4 आज बाजार बंद है, मोहनदास नैमिशराय पृष्ठ संख्या 40

****